myresearchgo Volume 1, August Issue 5, 2025, ISSN: 3107-3816 (Online)

Research Paper - Sonam Sushil Tiwari (Reg- No- 28124071)

हिंदी विभाग

शोध पत्र : वर्तमान समय में लघु कथाओं का अस्तित्व

शोधार्थी : सोनम सुशील तिवारी

मार्गदर्शक : डॉक्टर पूजा हेमकुमार आलपुरिया

(विश्वविद्यालय – श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल तिबरेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान)

Email ID- tsonamtiwari7802@gmail.com

सारांश

लघुकथा लेखन साहित्य की एक शैली है जो अपने विशिष्ट गद्य और संक्षिप्तता के लिए जानी जाती है यह अपने अन्य साहित्यिक समकक्षों जैसे कि उपन्यास की तुलना में काफी छोटी होती है। पहली हिंदी लघुकथा की प्रस्तुति की शुरुआत सरस्वती (1916) में प्रकाशित पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की कथा– रचना झलमला की गाजियाबाद से प्रकाशित पत्रिका सर्वोदय विश्ववाणी (सं. जगदीश बत्रा) में इसके पुनर्प्रकाशन से हुई। बाद में इसके कुछ अंशों को तराश कर प्रो. कृष्ण कमलेश ने इसे ‘‘पहली हिंदी लघुकथा’’ शीर्षक तले ही कथाबिम्ब के लघुकथा विशेषांक में प्रकाशित किया। इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक के उत्तरार्ध में आते–आते लघुकथा नई विधा नहीं रह गई है।

मुख्य शब्द

संक्षिप्तता, समकक्ष, अस्तित्व, विद्या, काल्पनिक, कलेवर, कथानक, संजीवनी बूटी, मार्जन, दृष्टिबोध, अभिव्यक्ति ।

प्रस्तावना

साहित्य की सभी विधाओं में कहानी का विशेष स्थान है। कहानी सुनना – सुनाना सभी को पसंद है, विशेषकर बच्चों को तो कहानी विशेष प्रिय हैं। साहित्य की सभी विधाओं में कहानी सबसे पुरानी विधा है और जन जीवन में सबसे अधिक लोकप्रिय है। कहानी में किसी सत्य अथवा काल्पनिक घटना का इस प्रकार कथन किया जाता है जिसे श्रोता रुचि पूर्वक सुनता है। इसलिए कहानी में एक कहानी कहने वाला और एक कहानी सुनाने वाला आवश्यक होता है।

जहाँ तक लघुकथा का प्रश्न है तो यह भी कथात्मक विधा है पर यह कहानी से भिन्न होती है क्योंकि दोनों के कलेवर में अंतर होता है, इसलिए दोनों को एक मानकर नहीं चलना चाहिए। किसी भी कहानी को संक्षिप्त कर देने से लघुकथा नही बन जाती। हाँ ! यह सत्य है कि लघुकथा कहानी के सबसे नजदीक होती है इसलिए कहानी को अंग्रेजी में Story और लघुकथा को Short-

Story कहा जाता है। लघुकथा लेखन एक साहित्यिक विधा है जिसकी विशेषता इसकी सीमित शब्द प्रयोग है। यह साहित्य की एक ऐसी विधा है जो एक बार में पढ़ी जा सकती है।

उद्देश्य

लघुकथाएँ कथानक और गति को विकसित करने में बहुत सहायक होती है। आज जब मनुष्य के पास समय का अभाव है ऐसी विषम परिस्थिति में लघुकथाएँ किसी वरदान से कम नहीं है। आज समाज में स्थितियाँ इतनी विकट है कि व्यक्ति अपने दैनिक क्रियाकलाप में ही उलझा रहता है। आज व्यक्ति के पास ना तो उपन्यास कहानी पढ़ने का समय है और ना ही उसके अनुकूल मानसिकता। अतः ऐसे समय में लघुकथाएँ संजीवनी बूटी का कार्य करतीं हैं, क्योंकि लघुकथाओं को मनुष्य एक ही बैठक में पढ़ व समझ सकता है।

यह गद्य कथा है लेकिन यह किसी भी शैली से संबंधित हो सकती है, चाहे वह अपराध हो या कल्पना, क्योंकि लघुकथाओं का एक बड़ा पहलू एक विशिष्ट मूड या माहौल बनना होता है। कम से कम शब्दों में पाठकों तक अपनी बात पहुंचाना लघुकथा का मुख्य उद्देश्य है।

भविष्य में अस्तित्व

जिस तरह से आज समय गतिमान है उसे देखते हुए यही कहा जा सकता है कि आने वाले समय में मनुष्य के पास स्वयं के लिए भी समय का अभाव रहेगा तो उनके पास इतना समय कहाँ रहेगा कि वह उपन्यास या कहानी पढ़ने का समय निकाल सके। ऐसे समय में लघुकथाएँ किसी भी किसी वरदान से काम नहीं है साहित्य से हमारे मस्तिष्क का मार्जन होता है। अतएव साहित्य के बिना जीवन संभव नहीं है इसलिए दिन प्रतिदिन लघु कथाओं का अस्तित्व बढ़ता चला जा रहा है।

लघुकथा ने आज सभी के हृदय में अपना स्थान बना लिया है। उसका एक कारण यह भी है इसकी संक्षिप्तता। मनुष्य चलते–फिरते उठते–बैठते कभी भी लघुकथाओं को एक बार में समाप्त कर सकता है। समय के अभाव के चलते आने वाले समय में लघुकथाओं का भविष्य और भी उज्जवल है।

निष्कर्ष

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आधुनिक हिंदी साहित्य में लघुकथा का अपना एक अलग व्यक्तित्व एवं पहचान है। उसने अपने युग को संपूर्ण रूप से अभिव्यक्ति और दिशा दी है। तर्क, बुद्धि, ज्ञान, विवेक और वैज्ञानिकता उसके दृष्टिबोध के महत्वपूर्ण बिंदु है। साहित्य में सभी विधाओं से अलग होकर लघुकथा ने अपनी अलग पहचान बनाई है जिसका हिंदी साहित्य के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ सूची

- लघुकथा का प्रबल पक्ष : बलराम अग्रवाल आलेख प्रकाशन नई दिल्ली 2019 पृष्ठ संख्या 112
- आकाश के तारे धरती के फूल : कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 1964 पृष्ठ संख्या 9 से 23
- साहित्य का समाजशास्त्र : डॉ दयानंद तिवारी प्रकाशन संस्थान 4268–1313, अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली 2013 पृष्ठ संख्या 94 से 95
- मेरी चुनिंदा लघुकथाएँ : शील कौशिक दिशा प्रकाशन 2019 पृष्ठ संख्या 9 से 11
- मीरा जैन की 100 लघुकथाएँ : मीरा जैन ऋषिमुनि पब्लिकेशन 2016 संख्या 6, 10, 26
- साँझ का दर्द : डॉ. मेजर शक्तिराज देवशिला पब्लिकेशन 2022 पृष्ठ संख्या 11 से 21
- सम्यक लघुकथाएँ : मीरा जैन बोधि प्रकाशन 2016 पृष्ठ संख्या 9 से 19
- गुरु दक्षिणा नीलम राकेश विनायक पब्लिकेशन 2009 पृष्ठ संख्या 10 से 20